Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052(UIF)
Volume-4 | Issue-3 | Sept-2014
Available online at www.aygrt.isrj.org

महात्माबुद्ध के मानववादी संप्रत्यय की प्रासंगिकता

डॉ.धर्मेन्द्र कुमार

असिस्टेण्ट प्रोफेसर ,महामया राजकीय महाविद्यालय , श्रावस्ती .

प्रस्तावना :–

जगत्गुरु की संज्ञा से अभिहित, सात्विकता, सभ्यता, चरम मानवता की आदि स्थली भारतभूमि की सर्वोपरिता, सर्वोच्चता का दिग्दर्शन व परिलक्षण हमें सदैव से मिलता रहा है । यदि हम इसके कारण परम्परा का अंवीक्षण व अनुशीलन करें तो एक अनवछिन्नकारणपरम्परा का भूयशः दर्शन होता है। कहने का आशय है कि बहुत से कारण इसके जड़ में सन्निहित हैं। इन्हीं प्रशस्त कारणपरम्परा में छठीं शताब्दी के कालक्रम में उदभूत, विश्वमानवतावादी संप्रत्यय के आदि स्थापक व समर्थ जगतोपदेष्टा महात्मा बुद्ध के अवदान एवमुपादेयता का उल्लेख करना सर्वथा अनिर्वचनीय ही है क्योंकि उन्होंने जिस व्यापक दृष्टि के साथ मानव के ऐकान्तिक व आत्यंतिक कल्याण हेतु समन्वयात्मक व सामंजस्यपूर्ण दिव्यदृष्टि के साथ सदुपदेश दिया वह नितांत कल्याणप्रद सिद्ध हुआ।

विश्वमानवता को उपकृत करनेवाला ऐसा कोई प्रकरण नहीं था जिस पर महात्माबुद्ध की दिव्यदृष्टि न पड़ी हो। चाहे वह स्त्रियों के अधिकारों की व्याख्या करनेवाला कल्याणकारी व सशक्तिकरण करने वाला साम्यवादी विचार हो अथवा उंनके मानवाधिकारों का संरक्षण व संवर्धन करने वाला नैतिकतावादी संप्रत्यय हो। तथाकथित मानवता के विरुद्ध प्रथमबार सशक्त आवाज़ उठानेवाले महात्माबुद्ध ही थे जिन्होंने उच्चस्वरेण उत्घाटित किया–

कम्मुना वसलो होति कम्मुना होति ब्राह्मणो।
न जच्चा वसलो होति न जच्चा होति ब्राह्मणो।।

अर्थात न जन्म से कोई वृषलनिम्नकोटिक. होता है न कोई उत्कृष्टकोटिक होता है कर्म से ही कोई वृषल होता है और कर्म से ही ब्राह्मन होता है। वास्तव में इससे बड़ा सर्वात्मक मानववादी साम्यतावादी विचार नहीं हो सकता ऐसे विचार ही अत्युतम श्रेणी के अंतर्गत श्रेणीकृत किये जा सकते है।

बुद्ध की स्पष्ट स्वीकृति है जिस मानव में प्रेमाधिक्य, करुणाधिक्य, मैत्री, सत्यवादिता की अधिकता है और इससे विपरीत भावों की शून्यता है वही सच्चा मानव कहलाने का अधिकारी और मानवता का आराधक कहा जा सकता है।

महात्माबुद्ध का समग्र जीवन प्रेरणा का ऊर्जस्वीस्रोत और कल्याणात्मक संदेशों का अतुलित, अनुपम, अद्वितीय, असीम स्रोत है जिस हेतु ही वह भगवत्श्रेणी की उच्चता तक स्थान संधारित किये हैं। भावना में लोककल्याणमयता और तद्रूप आचरणिक प्रधानता का सम्मिश्रण वास्तव में उन्हें महामानव व महापुरुष के उच्चकोटि तक ले जाता है यही कारण है कि उनकी सार्वकालिकता व प्रासंगिकता का परिदृश्य यथावत् अग्रशील व अग्रगामी है और भविष्यकाल में सर्वजनोपयोगी बना रहेगा ।

अपने वैचारिक स्थापना में कि संसार का प्रत्येकजन दुःखी है के समर्थन में उन्होंने चार आर्यसत्यों की खोज की और समाधान भी प्रस्तुत किया।

मानव कल्याण सबके मूल में है क्योंकि वही मानवता को उपकृत करता है धारणीयता व पोषणीयता प्रदान करता है– भवंतु सब्ब मंगलं अर्थात् सभी प्राणियों का कल्याण हो, का संप्रत्यय ही बुद्ध के विचारों का केंद्रविंदु रहा है और ऐसे विचार का केंद्रविंदु होना

ही सच्चे धर्मोपदेष्टा के लिये अपरिहार्य विशेषता है जिसका सार्वत्रिक संरक्षण व परिपालन महात्माबुद्ध ने किया। पंचशील का सर्वतोभद्र कल्याणात्मक उपदेश बुद्ध का बहुत बडा अवदान है और उसकी प्रासंगिकता चिरस्थायी प्रकृति की है।

सब्बे सत्ता सुखी होंतु अर्थात सभी प्राणी सुखी हों यह बुद्ध का शाश्वतिक महत्ताप्राप्त सदुपदेश हैं जिसकी प्रासंगिकता सदैव अक्षुण्ण बनी रहेगी। यह उनका कितना सुंदर व सर्वग्राही विचार है कि–

नहि वैरेन वैरानि समंतीघ कुदाचनं
अवैरेन तु समंतीघ एस धम्मों सनंतनों

अर्थात् वैर वैर से कभी शान्त नहीं होता वह तो अवैर अर्थात् मैत्रीभाव से ही शान्त होता है यही प्राचीनकाल से चला आ रहा नियम धर्म है।

इस विचार से ही उनके मानववादी सोच का स्पष्ट परिलक्षण व परिचय प्राप्त हो जाता है। वस्तुतः ऐसी प्रशस्त व उद्दात्त सोच व चिंतन ही मानवता की धुरी है केन्द्रविन्द्रु है जिसका अनुकरण व अनुसरण करके कोई समाज अपने को श्रेष्ठ व समुन्नत बना सकता है। इस दिशा में बुद्ध जी के विचारों की प्रासंगिकता के नैरन्तर्य का सर्वोच्च उदाहरण प्रत्यक्षतः दृष्टिगत होता है।

वैचारिक स्वातंत्र्य, स्वावलम्बन की शिक्षा–
अत्ता ही अत्तनों नाथों कोहि नाथों परोसिया।

अर्थात् मनुष्य अपना स्वामी स्वयं है दूसरा कोई उसका मालिक नहीं– अन्धविश्वास, अविद्या, अज्ञान के परित्याग की शिक्षा, पारलौकिकता के माध्यम से मानव का मानव के साथ तादात्म्य का उपदेश, जातिवर्णादि जैसी कुप्रथा का खंडन कर इस उपदेश का स्थापन कि मनुष्य जाति मानी गयी है जिसमें कोई भेदभाव नहीं है–

एकैवा जातिर्लोके सामान्या न पृथक्विधा ।

मन की पवित्रता पर बल समता भातृत्व मैत्री आदि पर बल देते हुए उन्होंने निष्कर्षतः कहा कि सभी प्राणीसमुदाय सुखी और क्षमाशीलता से युक्त हो अपनी वाणी को विराम देते हूं–

सब्बे सत्ता सुखी होंतु,
सब्बे होंतु च खेमिनों।

इस प्रकार हम देखते हैं कि आधुनिकयुग को गतिशील व प्रगामी बनाने के लिये मानवकल्याण की सर्वोत्तम आवश्यकता है क्योंकि जब तक विश्व में शान्ति, सद्भाव, मैत्री, एकता, मानवता, उदात्तता, क्षमाशीलता, परकार्यसाहाय्यता आदि का भाव प्राबल्येन व प्राचुर्येण प्रभावी नहीं होगा तबतक वैश्विक शान्ति आदि को सातत्य व नैरंतर्य नहीं मिल सकता, वैषम्यादि अवस्था का संजाल ही सघन हो प्रबलतर होता रहेगा जो अन्ततः मानवकल्याण हेतु घातक परिस्थिति का ही सृष्टि करेगा।

अतैव महात्माबुद्ध के मानवकल्याण के संप्रत्यय ऐसे समय में ही हमारा मार्गदर्शन करते हैं और सहजतया, प्रकृष्टतया व अधिकतया लोकोपकारिणी, कल्याणदायिनी परिस्थिति एवं वातावरण को सृजित व निर्मित करने का हेतु बन–

अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसां।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकं।।

का उद्घोष कर लोगों को सफल जीवन जीने का सूत्र प्रवाह करते हैं जो अंततः वैश्विक कल्याणकारी भूमिका में स्थापित हो प्रासंगिकता का हेतु बनते हैं।

संदर्भः–

1. **धर्मशास्त्र का इतिहास – पी0वी0 काणे**
2. **भारतीय संस्कृति का इतिहास – रामधारी सिंह दिनकर**
3. **शोधपत्रसार – ओरिएण्टल कॉन्फेरेन्स 2008 कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय हरियाणा**
4. **संस्कृत हिन्दी कोश– वामन शिवराम आप्टे**
5. **भारतीय इतिहास एवं संस्कृति एन्साइक्ल्पीडिया– हुकुमचंद जैन** ;